VOL- IX | ISSUE- IV | APRIL | 2022 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.331 | ISSN 2349-638x

कथापर्व : एक अध्ययन

नीतू रानी,
हिसार

सारांष

विकेश निझावन हरियाणा की हिंदी कहानी के एक महत्वपूर्ण कथाकार है। अम्बाला हरियाणा में जन्में विकेश निझावन की कहानियां पढ़ना एक सुखद अनुभव होने के साथ-साथ ताजगी प्रदान करता है। कहानी व्यक्ति की संवेदनाओं और भावनाओं को सहजता से चित्रित करने के साथ-साथ व्यक्ति का जीवन से परिचय करवाते हुए समता का भाव पैदा कर उसे समरस बनाने का कार्य करती है। विकेश निझावन की कहानियों की बात की जाए तो यथार्थ के धरातल पर सत्य की खोज के साथ मनुष्य के भीतरी और बाहरी सामंजस्य करने को उद्यत दिखाई पड़ती है। 'कथा पर्व' विकेश निझावन का विशिष्ट कहानियों का संकलन ही नही सिंहावलोकन भी है। स्वतंत्र लेखन करते हुए विकेश निझावन ने हर छत का अपना दुख, अब दिन नही निकलेगा, आखरी पड़ाव एवं अन्य कहानियां, महासागर, मेरी चुंनिंदा कहानियां, गठरी, कोई एक कोना छुवन तथा अन्य कहानियों और कथापर्व जैसे कहानी संग्रह लिखे हैं। यह सबसे महत्वपूर्ण बात है कि जितने भी कहानी संग्रह विकेश निझावन ने लिखे हैं सबके-सब सामाजिक यथार्थ का चित्रण करने वाले संग्रह हैं।

कुंजी शब्द –

कहानी यात्रा, सिंहावलोकन, कथाकर, सिने जगत, शताब्दी, जीवन संदर्भ, सामाजिक संवेदना, पुनर्जन्म, अंधेरे में, एक टुकड़ा जिंदगी, माँ महापर्व, मुखतार नामा।

कहानी सम्पूर्ण जीवन का चित्रण नही है बल्कि जीवन के किसी अंश की अभिव्यक्ति है। यह अंश विशेष होता है और सुख-दुख, आशा-निराशा, मिलन-बिछोह, सफलता-असफलता का द्योतन करता है। यह जीवन की एक संवेदना होती है जो पाठक को प्रभावित किए बिना नही छोड़ती। कहानी के शाब्दिक अर्थ पर विचार करना इतना आवश्यक नही जितना की कहानी की संवेदना को समझना जीवन और जगत के मध्य जीवन निर्वाह करते हुए मनुष्य नामा नाना प्रकार अनुभव प्राप्त करता है, इनमें से कुछ अपनी इच्छा से होते हैं और कुछ विवशता के कारण होते है। कहानी में एक सच्चा कहानीकार इन्हीं अनुभवों की अभिव्यक्ति कर एक सशक्त कहानीकार बन जाता है।

इस दृष्टि से विकेश निझावन एक सशक्त कहानीकार हैं। हरियाणा के कहानी साहित्य में नही, अखिल भारतीय कहानी साहित्य में इनका नाम अग्रणी कथाकारों में आदर के साथ लिया जाता है। वे स्वयं कहानी के सन्दर्भ में लिखते हैं, ''कहानी एक यात्रा है – बाहर से भीतर तक। निरंतर खोज चलती रहती है। कुछ मिलता भी है, फिर कुछ लगता भी कि कुछ था जो पीछे छूट गया कुछ और है जो अभी पाना है, यह तो एक पड़ाव था, जहाँ मैं रूका केवल कहानियों की गठरी लिए हुए।''१ इस प्रकार जीवन के उन सभी क्षणों, जिनको की हिन्दी कहानी में पढ़ा जा सकता है, एक यात्रा है पुनः पुनः आरम्भ होने वाली। यह बात हम सभी जानते है कि जीवन चलने का नाम, चलते रहो सुबह और शाम, यही सभी कथाकार मानते हैं। मुंशी प्रेम चंद की हिन्दी कहानी सम्राट कहा जाता है। उन्होंने कहानी को जीवन रूपी बगिया को चुने हुए फूलों का गुलदस्ता कहा है। अतः यह बात साफ होती

है कि कहानी और जीवन दोनों एक दूसरे के पर्याय होकर, एक दूसरे के पूरक भी हैं।

'कथापर्व' पारूल प्रकाशन, ८८९/५८ त्रि नगर, दिल्ली-३५ से वर्ष २००६ में प्रकाशित है। इस संकलन में कुल पैंतीस कहानियां है और इस संग्रह की पृष्ठ संख्या दो सौ तैंतालीस है। इसमें सभी कहानियां हिन्दी की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित है। कहानी 'पुनर्जन्म' साप्ताहिक हिन्दुस्तान, जाने और लौट आने के बीच, सारिका, अंधेरे में कहानी, उद्बिलाव दूरदर्शन पर प्रस्तुति, गुल्लक वागार्थ, लहरों पर नियंत्रण हिन्दी नेष्ट, दबी हुई आग शिखर, यह सिर्फ इबादत नही अन्यथा, गाँठ साप्ताहिक हिन्दुस्तान, सपने गूंज, एक टुकड़ा जिंदगी धर्म युग, भूख दैनिक भास्कर, गठरी वर्तमान साहित्य, किरचें नई दुनिया, जहर ाखिरी पडाव, पुल के दूसरी ओर, कादम्बनी में पुरस्कृत, न चहाते हुए सारिका, उसकी मौत, पुरस्कृत प्रेमचंद प्रतियोगिता, वनवास कहानी, जुलूस कथाविम्ब माँ-पुरस्कृत हरियाणा साहित्य अकादमी, औरत संडेमेल, मेंढ की गूंज, दौड मसिकागद, एक और द्रोपदी दैनिक हिदुस्तान, महादान सरिता, आखिरी पड़ाव कथाविम्ब, जीवन का दर्द कहानी अपराजिता हरिगंधा, अम्मा सप्ताहिक हिन्दुस्तान, केवल एक सीढ़ी की जगह सारिका, स्पर्श नवभारत टाइम्स, हर छत का अपना दुख कहाँ क्या, कुर्सी दैनिक ट्रिब्यून, मुख्तार नामा पुरस्कृत है और पलाश में प्रकाशित है।

इस प्रकार इस कथा संकलन विकेश निझावन की कहानियों को विशिष्ट कहानियों का कथा संकलन कहा जा सकता है, इसके लिए यह तर्क भी दिया जा सकता है कि उक्त संकलन की कहानियों को तीस संपादकीय टीम के मूल्यांकन के मानकों की कसौटी पर सफलता प्राप्त की है। संवेदना और शिल्प दोनों दृष्टियों यह संकलन महत्वपूर्ण है। स्वयं विकेश निझावन कहते है, ''यात्रा फिर से शुद्ध हो जाती है और कोई नई महानी जन्म लेने लग जाती है। यह सत्य की खोज है, एक यथार्थ की खोज है। वह सत्य जो हमारे मन मस्तिष्क में घुमड़ रहा है। जो हो रहा है और जो हम देख रहे हैं सत्य केवल वही नही है। वह दूर तक है।''२ यहाँ लेखक जीवन के सत्य की व्यापकता की भी बात करता है, और यह भी कहना चाहता है कि जो खुद पर घटता है वही सत्य नही होता, दूसरे पर घटता है वह भी सत्य होता है। एक उदाहरण प्रस्तुत है, ''लोग-बाग पानी में पैसा फैकते। उद्बिलाव पानी में गोता लगाता, पानी के बीच पड़ी चट्टान के चारों ओर चक्कर लगाता और पैसों को बाहर लाकर छोड़ता। यह अच्छा खासा तमाशा था। चिड़ियाघर इसी पिंजरे पर शायद सबसे अधिक रश था।''३

सत्य और यथार्थ में अधिक भेद नही होता। सत्य चूंकि कठोर होता है इसलिए भद्दा भी होता है और यथार्थ के भद्देपन के करीब भी होता है। उदाहरण प्रस्तुत है। दबी हुई आग का एक उदाहरण प्रस्तुत है, ''आप सुबूत की बात करते हैं वकील साहब, मेरे भीतर को झाँककर देखिए मैं बिल्कुल लहूलुआन हो चुकी हूँ। शांति जैसी गँवार और फूहड़ औरत यह बात कह डालेगी, किसी को बिल्कूल भी अंदाजा नही था।''४ वस्तुत सत्य की इस यात्रा में संकलन में कई कहानियों के संदर्भ पढ़े जा सकते हैं। उसकी मौत का एक इसी प्रकार का उदाहरण और प्रस्तुत है, ''यह बात उसने इस ढंग से कही कि जैसी वह आप पर इल्जाम लगा रही हो, गुस्सा बहुत आया था, उस पर लेकिन समय की नजाकत कुछ और थी।''५ इस प्रकार जीवन में सत्य का उद्घाटन इन कहानियों के संदर्भ है।

समाज परम्पराओं की एक व्यवस्था को लेकर चलता है। इस दृष्टि से विकेश निझावन की कहानियां सामाजिक परम्पराओं और संदर्भों का खूब वर्णन हुआ है। सामाजिक परम्पराओं में बुजुर्गों की सेवा को भी गिना जाता है, एक उदाहरण प्रस्तुत है, ''तूने बाबा का इलाज क्यों नही करवाया? मैने एक बार जोर देकर पूछा तो, अम्मा हंस दी अरे इस बीमारी का तो काई

ईलाज है ही नही। बड़ी लाइलाज सी बीमारी है। इनको विरासत में मिली है।''६ यह उदहरण विकेश निझावन की कहानी लहरों पर नियंत्रण में है। ध्यान देने की बात यह है कि इसमें एक बेटे की अपने पिता को लेकर चिंता की अभिव्यक्ति की गई है। सामाजिक परम्पराओं में पुनर्जन्म की अवधारणा भारतीय संस्कृति का अहम् पहलू है इसमें जन्म-दर-जन्म के साथ मुक्ति की फंतासी की बात कही गई है। उदाहरण प्रस्तुत है, ''पुनर्जन्म सब झूब है वह एकदम आवेश में गया ....खुद को झूठा तसल्ली देते की कोशिश, इतना कहकर वह चुप हो गया और इस विषय पर वह और कुछ नही कहना। इसलिए वह अपने काम में जुट गया।''७

रवींद्र नाथ टैगोर ने कहा है, ''नदी जैसे जलस्त्रोत की धारा है, मनुष्य वैसे ही कहानी का प्रवाह है।''८ इस प्रकार जलधारा में कितने ही स्त्रोत का जल मिले वह एक हो जाती है, उसी प्रकार कहानी का स्त्रोत सम्पूर्ण जीवन के लिए भावों के एकाकार का नाम है। मन की स्थिति और मन की अवस्था इस जीवन प्रवाह का नाम है, मन की अवस्था के संदर्भ में गुल्लक कहानी में लिखते है, ''मुझे लगा कि शिप्रा उस टूटी हुई गुल्लक की तरह पूरी तरह बिखर चुकी है। अब वह न तो अपना वर्तमान समेट सकती है और न ही उनका भविष्य।''९ इसी प्रकार नारी का वस्त्रों के प्रति मोह भी नारी मनोविज्ञान ही कहलाता है, 'मैं तो जयपुरी सूंट सिलवाऊंगी ..... तेरे चाव भी निराले है, अब मनसा एकाएक गम्भीर भी हो गया था।''९ इस प्रकार विकेश निझावन ने जीवन जगत के उन धरातलीय तथ्यों को अपनी कहानियों का कथ्य बनाया है जो बिल्कूल व्यवहारिक और सामाजिक होने के साथ-साथ युगीन भी है। सामाजिक एवं व्यवहारिक होने के साथ-साथ लेखक का मनोविज्ञान भी कमाल है।

कथ्य के साथ-साथ विकेश जी भाषा शैली भी भाव प्रवण हैं। पात्रों की मानसिक सूझ-बूझ और शिक्षा उनके संवादों में देखी जा सकती है। कहानियों का कथ्य इतना भावप्रवण है कि संवादों की शब्दावली पाठक को द्रवित कर देती है। कई बार तो पात्र स्वयं अनायास ही आँखों के सामने आ खड़े होते हैं। भाषा समाज के प्रत्येक वर्ग की है। कहने को खड़ी बोली का आम बोल चाल का स्वरूप देखने को मिलता है परनतु भाषा तराशी हुई सी प्रतीत होती। कहानी कला के सभी शिल्पों का प्रभावशाली प्रयोग हुआ है। कहानी के सभी छंद तत्व संयोजन सफल है।

संदर्भ सूची –

१. डॉ. सत्यनारायण की लेखक से बातचीत का अंश
२. वही
३. कथापर्व, विकेश निझावन पृष्ठ २८
४. वही, पृष्ठ ४६
५. वही, पृष्ठ १३३
६. वही पृष्ठ ४३
७. वही पृष्ठ ०३
८. रविंद्र नाथ टैगोर कहानी कला (मूल बंगला) अनुवाद जितेंद्र चौधरी पृष्ठ ७३
९. कथापर्व विकेश निझावन पृष्ठ ३८